उपसंहार

निष्कर्ष एवं उपसंहार

ब्रज संस्कृति उत्सव धर्मी संस्कृति है। मूलता ब्रज क्षेत्र भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं और उनसे सम्बन्धित लोकोत्सव, लोकगायन, वादन व लोककलायें और परम्परायें एवं रीति–रिवाज, आदि प्रायः भगवान श्रीकृष्ण पर आश्रित है। इसके अतिरिक्त ब्रज का लोकमानस नगरीय औपचारिक्ताओं से परे अपनी भोली बुद्धि से परम्परानुसार जो कुछ भी देखता है, सुनता है उस पर अपनी श्रद्धा व भक्ति से तरबतर होकर उन्हें अपनाने लगता है, यही परम्परा उसके जीवन के साथ सदैव जुड़ी रहती है, चाहे वे वर्षभर में होने वाले पर्व, उत्सव व त्योहार ही क्यूँ ना हो। इन सभी परम्पराओं से वह स्वयं को अलग नहीं कर पाता। अपनी हर तीज–त्योहार को विधिविधानुसार गायन–वादन व नृत्य के साथ पूरा करता है। मैंने जो शोध किया है उसमें मैंने ब्रजमण्डल के लोकोत्सव, लोककलायें व उनसे सम्बन्धित लोकसंगीत के अध्ययन को दर्शाया है, जो ब्रज में होने वाले हिन्दू धर्म सम्बन्धी रीति–रिवाजों में समाहित है।

प्रथम अध्याय ''ब्रजमण्डल'' में मैनें ब्रज शब्द के अर्थ एवं स्वरूप और उसकी ऐतिहासिक, धार्मिक, आर्थिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ ब्रज के लोक उत्सवों की परम्पराओं के विषय में समझाया है।

द्वितीय अध्याय ''ब्रज संस्कृति में संगीत की अहम भूमिका'' में मैंने ब्रज के लोक शब्द के विवेचन के साथ ब्रज लोक संस्कृति में होने वाले उत्सवों के गीतों को समझाया है जो कि इस अध्याय का पाठन करने में मिलेगा।

तृतीय अध्याय ''ब्रज के प्रमुख लोक वाद्य, लोक नाट्य एवं त्यौहार'' के बारे में दिया है जिसमें मैंने प्रचलित लोकगीत, लोकवाद्य, तथा ब्रज के लोकनृत्य एवं उनके विभिन्न रूपों को थोड़े–थोड़े रूप में प्रस्तुत किया है जो कि तृतीय अध्याय को देखने से प्राप्त होगा।

चतुर्थ अध्याय ''ब्रज लोक संस्कृति में रीति–रिवाज, त्यौहार, पर्व, उत्सव, मांगलिक उत्सव गीत'' के विषय में बतलया है। इसमें मैंने ब्रज के घर–घर में होने वाले रीति–रिवाज के गीतों के साथ, ब्रज के प्रमुख तीज त्यौहार व उत्सवों एवं ब्रज प्रदेश के बाल–बालिकाओं के उत्सव व उनके गीतों को दिखाते हुये, विभिन्न कलाकारों का साक्षात्कार लेते हुये विभिन्न त्योहारों का अवलोकन किया है।

पंचम अध्याय ''ब्रज मण्डल की लोकोत्सव कलायें'' में मैंने ब्रज के छोटे बालक–बालिकाओं के उत्सव व खेल, टेसू व झांझी, न्योरता व सांझी के चित्रों व उनके खेल गीतों को प्रस्तुत किया है और इसके पश्चात ब्रज मण्डल के लोकोत्सव गीतों का लोकोत्सव कलाओं में परस्पर सम्बन्ध को दिखाया है।

षष्टम अध्याय ''ब्रज के लोकोत्सव गीतों की स्वरलिपिबद्ध विशिष्ट रचना'' में मैनें ब्रज के विभिन्न गीतों को स्वरलिपिबद्ध रचनाओं को प्रस्तुत किया है।

इसके बाद मैंने शोध प्रबन्धन कार्य को समापन की ओर ले जाते हुए निष्कर्ष एवं उपसंहार को लिखते हुये सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची, पत्र–पत्रिकाओं की सूची, सहायक पुस्तकालयों की सूची एवं सहायक संग्राहलयों की सूची देते हुए परिष्टि के साथ पूर्ण किया है।